DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
mo-9415376545

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

BA Part-II (comparative Government and Politics)

Ref. No................ Lecture No-28 Date 29/05/2020

बहुदलीय पद्धति के दोष—

बहुदलीय पद्धति के दोष उसके गुणों की संख्या से अधिक है और उनका उल्लेख निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

(1) शासन में अस्थिरता — बहुदलीय व्यवस्था मिले जुले मंत्रिमण्डलों को जन्म देती है जो कि बहुत अधिक अस्थिर होते हैं। जहां कहीं शासन में साझेदार राजनीतिक दलों के हित परस्पर टकराते हैं, वहीं विवाद उत्पन्न हो जाता है जिसका परिणाम शासन का पतन होता है। बहुत जल्दी-जल्दी बदलने वाली ये सरकारें जनता के हित पर विचार नहीं कर पातीं। बहुदलीय व्यवस्था के कारण ही फ्रांस को एक लम्बे समय तक राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजरना पड़ा था। फ्रांस के विदेश मंत्री एम० ब्रियां ने एक अवसर पर कहा था कि "फ्रांस में जिस दिन प्रधानमंत्री पद ग्रहण करता है, उसी दिन उसके किसी साथी के द्वारा उसके पतन के लिए कार्य करना प्रारम्भ कर दिया जाता है।"

(2) नीति की अनिश्चितता — सरकारों के शीघ्र परिवर्तन के कारण नीति की अनिश्चितता उत्पन्न होती है जिसका शासन के समस्त स्वरूप पर बुरा प्रभाव पड़ता है। सरकार में निरंतर होने वाले दीर्घकालीन योजना को व्यावहारिक रूप से असम्भव बना देते हैं।

(3) शक्तिशाली विरोधी दल का अभाव — बहुदलीय पद्धति में एक व्यवस्थित तथा शक्तिशाली विरोधी दल का जो कि संसदीय प्रजातंत्र का आधार है, विकास सम्भव नहीं हो पाता। शक्तिशाली विरोधी दल के अभाव में जनहित की अवहेलना की आशंका बनी रहती है।

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY: DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)

BA Part-II (Comparative Government and Politics)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date 29/08/20

(4) कार्यपालिका निर्बल स्थिति — बहुदलीय पद्धति में वास्तविक कार्यपालिका अर्थात मंत्रिमण्डल और प्रधानमंत्री की स्थिति बहुत निर्बल रहती है क्योंकि प्रधानमंत्री को सदा ही उन अलग-अलग राजनीतिक दलों को प्रसन्न रखना पड़ता है। ऐसी कार्यपालिका की स्थिति शोचनीय ही होती है। जिसके सिर पर सदैव अविश्वास के प्रस्ताव की तलवार लटकी रहती है।

(5) स्वार्थी नीतियों का प्रभुत्व — बहुदलीय पद्धति में सरकार जनता के निर्णय का परिणाम नहीं होती, वरन् यह तो चालाक और स्वार्थी राजनीतिज्ञों के पारस्परिक गठजोड़ का परिणाम होती है।

(6) कार्यकुशलता में कमी — बहुदलीय व्यवस्था के अन्तर्गत राजनीतिक दलों के नेताओं का ध्यान सरकार तोड़ने, गठजोड़ करने तथा किसी भी प्रकार से सरकार बनाने की ओर रहता है। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक कार्यकुशलता में बहुत अधिक कमी हो जाती है।

(7) दीर्घकालीन नियोजन सम्भव नहीं — बहुदलीय पद्धति में जब जल्दी-जल्दी सरकारों में परिवर्तन होते हैं तो लम्बे समय को ध्यान में रखकर देश की प्रगति के लिए किसी भी प्रकार की योजना का निर्माण सम्भव नहीं हो पाता। इस प्रकार बहुदलीय पद्धति देश की प्रगति में बाधक होती है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner